बी ए भूगोल पार्ट-II, पेपर-III, इकाई-III

<u>प्रश्न: भारत में सूती वस्त्र उद्योग के विभिन्न कारकों की चर्चा करें ।</u>

उत्तर: यह भारत का प्राचीन उद्योग है । पहले एक कुटीर उद्योग के रूप में था । पूरे विश्व में भारत के सूती कपड़ों का बड़ा ही महत्व था । यहां के मलमल, कैलिको, छींट इत्यादि काफी प्रसिद्ध है ।

भारत में सूती वस्त्र उद्योग के विकास के निम्नलिखित प्रमुख कारण है:

१. भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है यहां पर गर्मी के कारण लोग सूती कपड़े पहनना पसंद करते हैं

२. भारत में पारंपरिक तौर पर सूती वस्त्र तैयार करना एक प्राचीन काम है । यहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी लोग यह काम करते चले आ रहे थे क्योंकि यहां प्रचुर मात्रा में कपास की खेती भी होती थी।

सूती वस्त्र उद्योग का इतिहास

उपनिवेश काल में अंग्रेजों ने यहां के सूती वस्त्र उद्योग पर कोई खास ध्यान नहीं दिया । वे वहां से कपास को इंग्लैंड ले जाते थे और वहां के मानचेस्टर और लिवरपूल के कारखानों में वस्त्र निर्मित करके भारत में लेट थे । इंग्लैंड का तैयार वस्त्र भारतीय वस्त्रों से सस्ता होता था, इसलिए यहाँ के सूती वस्त्र उद्योगों को काफी प्रतिस्पर्धा करना पड़ा ।

भारत में पहला सफल सूती वस्त्र उद्योग मुंबई में १८५४ में स्थापित किया गया है क्योंकि यहां पर सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना के लिए जरुरी कारक मौजूद थे । जो कपास मुंबई पतन से इंग्लैंड को जाता था वह आसानी से मिल जाता था । यहां श्रमिकों की भी कोई कमी नहीं थी क्योंकि यह एक बड़ा नगर था । यहां पर कई वित्तीय संस्थाएं भी उपलब्ध थी । इस प्रकार सूती वस्त्र मुंबई और उसके आसपास धीरे-धीरे विकसित होने लगे । बाद में दो और मिल हैं शाहपुर मिल और कैलिको मिल अहमदाबाद में स्थापित हुई । आजादी के समय तक मुंबई सहित भारत में मिलों की संख्या 423 पहुंच गई परंतु अचानक एक के दुखद विभाजन का दंश पूरा देश झेलने लगा । अधिकांश कपास उत्पादक भूमि पाकिस्तान में चली गई और मिलें भारत में रह गई । भारत में 409 मिले रह गई और सिर्फ 29% कपास उत्पादक क्षेत्र ही रह गया । फिर भी स्वतंत्रता के बाद सरकार के द्वारा लगातार प्रयास करने के बाद सूती वस्त्र उद्योग एक बार फिर से विकास की स्थिति में आ गया ।

सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना के कारक

सूती वस्त्र उद्योग वजन ह्रास उद्योग नहीं है क्योंकि कपास एक शुद्ध कच्चा माल है और सूती वस्त्र बनाने में इसका वजन नहीं घटता है ।

कपास, करघा, शक्ति, श्रमिक, पूंजी तथा बाजार इस उद्योग को निर्धारित करते हैं ।
यह सभी किसी बड़े शहर के नजदीक उपलब्ध हो तो सूती वस्त्र उद्योग बाजार के निकट स्थापित हो जाता है ।

सूती वस्त्र निर्माण प्रक्रिया

सूती वस्त्रों का निर्माण हथकरघा, बिजली करघा और कारखानों में किया जाता है जहां कुशल और अर्ध कुशल मजदूरों की आवश्यकता होती है । इसके अंतर्गत सूत की कताई, बुनाई आदि का कार्य किया जाता है । बिजली करघों से कपड़ा बनाने में यंत्र का भी उपयोग किया जाता है इसलिए इसमें श्रमिकों की कम आवश्यकता होती है और उत्पादन भी अधिक होता है ।

सूती वस्त्र उद्योग का वितरण

आजादी के बाद अधिकांश कारखाने गुजरात और महाराष्ट्र में स्थापित की गई क्योंकि वहां बाजार, परिवहन, कपास, आर्द्र जलवायु आदि उपलब्ध थी । बाद में यह देश के कई अन्य राज्यों में भी स्थापित किया जाने लगा ।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र में मुंबई सोलापुर पुणे वर्धा नागपुर औरंगाबाद व जलगांव में सूती वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र हैं

गुजरात

गुजरात में अहमदाबाद बड़ोदरा सूरत और बंदर और राजकोट में प्रमुख सूती वस्त्र उद्योग केंद्र हैं

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल में हावड़ा मुर्शिदाबाद हुगली और रामपुर में प्रमुख सूती वस्त्र उद्योग केंद्र हैं

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश में कानपुर मुरादाबाद आगरा और मोदीनगर प्रमुख सूती वस्त्र उद्योग केंद्र है

मध्य प्रदेश : मध्य प्रदेश में ग्वालियर उज्जैन इंदौर देवास प्रमुख सूती वस्त्र उद्योग केंद्र है

तमिलनाडु : तमिलनाडु में कोयंबटूर चेन्नई और मदुरई प्रमुख सूती वस्त्र उद्योग केंद्र है

इस प्रकार भारत में सूती वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र निम्नलिखित है:
श्रीनगर, अमृतसर, मोदीनगर, दिल्ली, ग्वालियर, कानपुर, वाराणसी, मुर्शिदाबाद, कोलकाता, अहमदाबाद, इंदौर, नागपुर, जामनगर, सूरत, मुंबई, सोलापुर, बंगलुरु, मैसूरु, चेन्नई, कांचीपुरम, तंजौर, कोयंबटूर इत्यादि ।
भारत की अधिकांश सूती वस्त्र **मिले** महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश तथा तमिलनाडु में सकेंद्रित है।

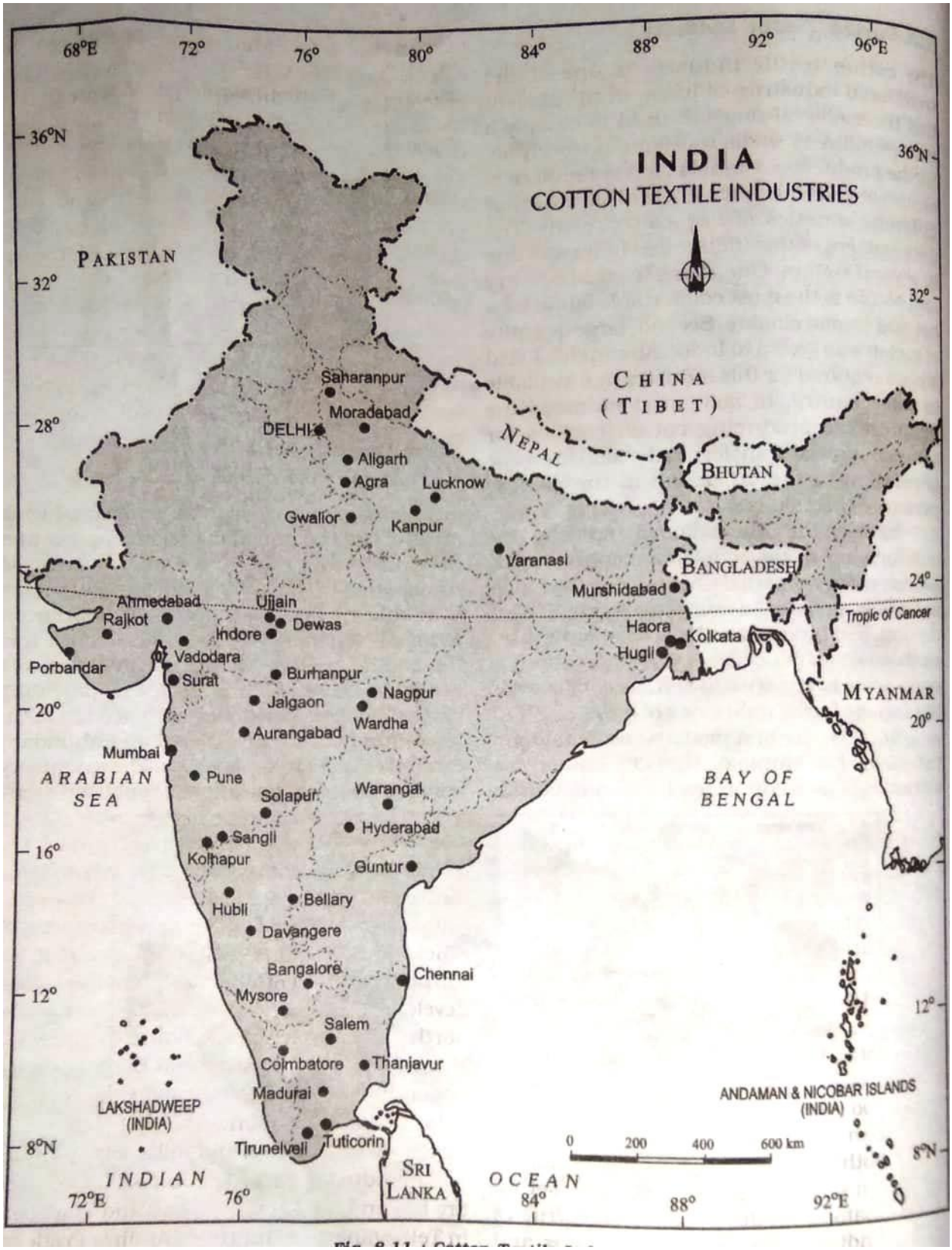

भारत के सूती वस्त्र केंद्र (चित्र: एन सी ई आर टी)

सूती वस्त्रों के उत्पादन में विभिन्न राज्यों का योगदान:

महाराष्ट्र	40 %
गुजरात	35%
तमिलनाडु	7%
अन्य राज्य	18%

कुछ प्रमुख तथ्य

***वस्त्र पार्क** - वस्त्र पार्क की स्थापना तमिलनाडु के तिरुपुर जिले में एडवरम पलायम गांव में की गई है । यह सिले सिलाए वस्तुओं के निर्यात और संवर्धन का कार्य करता है ।

*मुंबई - मुंबई को **सूती वस्त्रों की महानगरी या वस्त्रों की राजधानी** भी कहा जाता है क्योंकि यहां समस्त भारत का लगभग एक चौथाई सूती वस्त्र तैयार किया जाता है

*कानपुर - **उत्तर भारत का मैनचेस्टर**

*कोयंबटूर - **दक्षिण भारत का मैनचेस्टर**

*अहमदाबाद - **भारत का मैनचेस्टर या भारत का बोस्टन**

सूती वस्त्र उद्योग की समस्या

सूती वस्त्र का उत्पादन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में सूती वस्त्रों का उत्पादन लगभग 5 गुना हो गया है हालांकि निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

*उत्तम किस्म के कपास की कमी

*कम उत्पादकता देने वाली परंपरागत मशीनों की प्रधानता

*अनियमित विद्युत आपूर्ति

*निम्न उत्पादकता

*कृत्रिम रेशे से निर्मित वस्तुओं के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा

इस प्रकार सूती वस्त्र उद्योग भारत का एक विशाल उद्योग है और यह कृषि के बाद दूसरा सबसे अधिक रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्र है । यहां देश के कुल श्रमिकों का 20% काम करता है । वर्तमान में औद्योगिक उत्पादन में इसका हिस्सा 14% है जबकि जीडीपी में 4% और विदेशी आय में 17% । सूती वस्त्र उद्योग पर विशेष ध्यान की जरूरत है क्योंकि यह उत्पादन के मामले में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है ।

****

प्रस्तुति: बोलेंद्र कुमार अगम, सहायक प्राध्यापक, भूगोल, राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान